

## “प्लास्टिक को पटसन से बदलें” और “अपशिष्ट से धनोपार्जन”

### विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर भाकृअनुप-क्रिजैफ का संदेश

भारत की आजादी के 75साल पूरे होने के उपलक्ष्य में पूरे देश में “भारत का अमृत महोत्सव” मनाया जा रहा है। एक साल से अधिक समय तक चलनेवाले इस मेगा इवेंट, जो कि 15 अगस्त, 2022को पूरा होने जा रहा है, के दौरान केंद्र सरकार के मंत्रालयों ने देश की स्वतंत्रता के बाद की यात्रामें सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी पहलुओं के उच्च बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कई कार्यक्रम निर्धारित किए हैं। इस श्रृंखला में, भाकृअनुप – केंद्रीय पटसन और समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान (ICAR-CRIJAF), बैरकपुर ने विश्व पर्यावरण दिवसवाले इस सप्ताह के



दौरान स्वच्छ और हरित भारत की थीम पर तीन वर्चुअल (Virtual ) व्याख्यान आयोजित किए। भारत का अमृत महोत्सव और विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में, जून 4-7, 2021तक "प्लास्टिक को बदलने के लिए प्राकृतिक रेशों की भूमिका", "अपशिष्ट से धनोपार्जन और ईकोफारमिंग" और "पटसन में जीनोम संपादन (editing)" पर तीन वर्चुअलव्याख्यान आयोजित किया गया। इन प्राकृतिक रेशा फसलों द्वारा प्रदान की जाने वाली पर्यावरणीय लाभों और अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र बनाने में इनकी भूमिका को उजागर करने के लिए संस्थान द्वारा इस तरह के विषयों का चुनाव किया गया था। डॉ. गौरांग कर, निदेशक, भाकृअनुप-क्रिजैफ ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि प्राकृतिक रेशे, विशेष रूप से पटसन अपने सुनहरे दिनों के तरफ फिर से लौटेंगे क्योंकि प्लास्टिक को प्रतिस्थापन करने और पर्यावरण को बचाने के लिए ये सबसे आदर्श और उपयुक्त रेशा है ।

डॉ. एस. के. झा, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-क्रिजैफ ने पहले व्याख्यान में, प्लास्टिक कचरे से होने वाले विभिन्न प्रकार के प्रदूषण, कृषि, वन्य जीवन, जलीय जीवन, समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र और मानव स्वास्थ्य पर प्लास्टिक के नकारात्मक प्रभाव के बारे में बताया। प्लास्टिक के विकल्प तलाशने के कारणों और प्राकृतिक रेशों, विशेष रूप से पटसन रेशा क्योंअच्छा विकल्प हो सकता है, इसके बारे में बताया ।

डॉ. गौरांग कर, निदेशक, भाकृअनुप-क्रिजैफ ने अपनी विशेष टिप्पणी में प्लास्टिक प्रदूषण पर चिंता व्यक्त की और जोर दिया कि एकल उपयोग प्लास्टिक को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने के मामले में पटसन रेशा की भविष्य में होनेवाली मांग की आपूर्ति करने के लिए प्रौद्योगिकियों एवं इसके लिये एक रोड मैप को तैयार किया गया है। देश-विदेश में हुए पटसन के शॉपिंग बैगों की नई मांग के कारण प्रति वर्ष 8 लाख गांठ (bale) से अधिक की अतिरिक्त आवश्यकता होगी। आने वाले दशकों में पटसन उत्पादकता में आवश्यक वृद्धि उत्पन्न करने के लिए क्रिजैफ के पास पर्याप्त प्रौद्योगिकियां और रोड मैप हैं ताकि पटसन निर्मित विविध उत्पाद पूरी तरह से प्लास्टिक को प्रतिस्थापित कर सकें।

डॉ. डी.बी. शाक्यवार, निदेशक, भाकृअनुप-एन.आई.एन.एफ.ई.टी. (NINFET), कोलकाता ने अपने अध्यक्षीय भाषण में पटसन सेक्टर को और अधिक जीवंत बनाने के लिए विभिन्न हितधारकों के बीच मजबूत संबंध और समन्वय की वकालत की।

विश्व पर्यावरण दिवस, 5 जून, 2021 पर संबोधित करते हुए डॉ. गौरांग कर ने इस बात पर जोर दिया कि कृषि प्रौद्योगिकियों का विकास आर्थिक लाभ और पारिस्थितिक को ध्यान में रखकर करना चाहिए ताकि ऐसी प्रौद्योगिकियां उत्पादकता, गुणवत्ता, मिट्टी के स्वास्थ्य और समग्र पर्यावरणको बनाए रखने में अधिक टिकाऊ हों।

डॉ. ए.के.सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-क्रिजैफ ने "अपशिष्ट से धनोपार्जन और पारिस्थितिकी खेती" पर एक व्याख्यान दिया। कृषि अपशिष्ट का अनुचित प्रबंधन वायु, मिट्टी और जल प्रदूषण को बढ़ाने में योगदान दे रहा है। भारत हर साल लगभग 500 मिलियन टन कृषि अपशिष्ट और 62 मिलियन टन म्यूनिसिपल ठोस अपशिष्ट उत्पन्न करता है, जो लैंडफिल साइटों के आसपास अप्रिय गैसों और ग्रीन हाउस गैस उत्पन्न करता है। देश में उत्पन्न कृषि और म्यूनिसिपल कचरे की भारी मात्रा को कृषि में उपयोग के लिए बिजली और हरी उर्वरक उत्पन्न करने के लिए बहुत अच्छी तरह से परिवर्तित किया जा सकता है। स्थायी इको-फार्मिंग के लिए और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए कृषि गतिविधियों के दौरान उत्पन्न विभिन्न अपशिष्ट पदार्थों का उपयोग करके धन सृजन के लिए कई प्रौद्योगिकियां उपलब्ध हैं।

इस सत्र के अध्यक्ष, डॉ. बी. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सी.आई.एफ.आर.आई.(CIFRI), बैरकपुर, ने कहा कि किसानों और पर्यावरण के लाभ के लिए कृषि कचरे से धन बनाने के लिए प्रौद्योगिकियों का धरातल पर सक्रिय रूप से कार्य करने का समय आ गया है।

डॉ. एस. दत्ता, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-क्रिजैफ द्वारा दिया गया तीसरा व्याख्यान "जूट में जीनोम संपादन" पर था, जिसमें उन्होंने जीनोम संपादन तकनीक, बेहतर गुणवत्ता के साथ जूट के विकास में इसके दायरे, कम अवधि में उच्च उत्पादकता के बारे में चर्चा की।

डॉ. गौरांग कर ने बेहतर पटसन और समवर्गीय रेशों के किस्मों को विकसित करने के लिए जीनोम-एडिटिंग तकनीक का व्यवस्थित तरीके से उपयोग करने के लिए एक रोडमैप तैयार करने पर जोर दिया जो आने वाले दशकों में होनेवाले जलवायु स्थिति में अच्छा प्रदर्शन करेगा।

इतना ही नहीं, भारत का अमृत महोत्सव और विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में वर्चुअल ड्राइंग और कविता प्रतियोगिता भी आयोजित किया गया जिसमें संस्थान के कर्मचारियों व उनके परिवार के सदस्यों ने भाग लेकर पुरस्कार अर्जित किया।